वह रहस्यमय युवती
अनिल शेखर "अमस"

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

यह कथा लगभग 20-30 वर्ष पुरानी पृष्टभूमि पर आधारित है ।

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है ।

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

आपका

अनिल शेखर “अमस

anilshekhar.amas@gmail.com

वह रहस्यमय युवती

कालखंड के हिसाब से यह आज से 20-25 साल पहले की बात है । उस समय कंप्यूटर इतना व्यापक रूप से हर आदमी की पहुंच में नहीं था । धीरे धीरे कंप्यूटरीकरण हो रहा था । कार्यालयों बैंकों आदि में धीरे-धीरे कंप्यूटर लग रहे थे । इससे आप उस कालखंड का अंदाज लगा सकते हैं ।

आइए.....
आपको उस समय मे लिए चलता हूँ ।

हर दिन की तरह उस दिन भी कबीर मानिकपुरी अपने गांव की ओर लौट रहा था । कबीर लगभग बाईस साल का नौजवान है जो शिवनाथ नदी के किनारे बसे हुए एक गांव झुमका में रहता है । उसने 12वीं की परीक्षा पास की और उसके बाद भिलाई के एक कंप्यूटर कोचिंग में 2 साल का कंप्यूटर का कोर्स किया । गांव का बच्चा और कंप्यूटर कोचिंग यह बिल्कुल अजूबा जैसी बात थी लेकिन कई बच्चे ऐसे होते हैं जो अपनी राह खुद चुन लेते हैं । कबीर भी कुछ कुछ वैसी ही प्रजाति का था....

उसकी प्रतिभा को देखकर कंप्यूटर सेंटर के लोगों ने कोर्स खत्म होते ही उसे जॉब ऑफर कर दी । यह कबीर के लिए बेहद खुशी की बात थी । वह एक गरीब परिवार से था । इस प्रकार से नौकरी मिल जाना उसके लिए किसी वरदान से कम नहीं था । कंप्यूटर सेंटर वालों ने उसके लिए ₹1500 की तनख्वाह तय की थी । उस समय के हिसाब से यह काफी अच्छी राशि थी ।

कबीर का काम सुबह 10:30 बजे से प्रारंभ होता था और लगभग 5:30 बजे उसकी छुट्टी होती थी । भिलाई से उसका गांव लगभग 7 किलोमीटर पड़ता था । कबीर काफी खुश था ।

जैसे-जैसे जीवन में अनुकूलता आती जाती है हम अगले चरण की आगे बढ़ते हैं ।
उदाहरण के लिए अगर आपकी पढ़ाई हो चुकी है तो आप यह सोचते हैं कि काश कोई नौकरी मिल जाती !

जैसे ही नौकरी मिल जाती है और आपकी जेब में पैसे आने लगते हैं तो आपके मन में यह विचार आता है कि कोई लड़की/लड़का या पत्नी/पति मिल जाती ....
यह स्वाभाविक समीकरण है जो लगभग सभी के ऊपर लागू होता है ..

कबीर भी इसका अपवाद नहीं था.....

कंप्यूटर क्लास में लड़कों की संख्या कम होती है और लड़कियों की संख्या ज्यादा होती है !
उस समय यही ट्रेंड था ....

कबीर के साथ में एक लड़की पढ़ती थी जिसका नाम था मोनिका !
मोनिका अच्छे परिवार से थी और शौकिया कंप्यूटर सीखने के लिए आई थी !

कबीर और मोनिका के बीच में जमीन आसमान का फर्क था । कबीर ठेठ देहाती किस्म का जीव था । जो अचानक से कंप्यूटर के क्षेत्र में आ गया था । मोनिका काफी मॉडर्न परिवार से थी । देखने में वह बहुत ज्यादा खूबसूरत नहीं थी, लेकिन जैसा कि आप लोग जानते हैं कि अगर आपको मेकअप करना अच्छी तरह से आता हो तो आप किसी को भी परी जैसा दिखा सकते हैं । मोनिका भी कुछ-कुछ उसी श्रेणी की युवती थी । वह भरे पूरे बदन की गोरी चिट्टी लड़की थी और जब मेकअप करके निकलती थी तो देखने वालों की निगाहें उस पर अटक जाती थी ! उसके साथ-साथ उसका कपड़े पहनने का अंदाज भी काफी आधुनिक था । उस समय के हिसाब से बहुत सारी चीजें उसमें से दिखती छलकती रहती थी जो लोगों को और आकर्षित करती

थी । एक तरह से वह पूरे कंप्यूटर सेंटर में सभी के आकर्षण का केंद्र थी ।

प्रकृति का नियम है कि विपरीत चीजें एक दूसरे को अपनी तरफ आकर्षित करती है !
बड़ी अजीब है ....
लेकिन सच है .....
तो !
जहां सारे लोग मोनिका की तरफ आकर्षित हुए पड़े थे.....
वही मोनिका मन ही मन कबीर को पसंद करती थी !
जिसकी जानकारी कबीर को नहीं थी ।
कबीर अपनी धुन में मस्त रहता । उसे ऐसा लगता था कि मोनिका उसकी दुनिया की जीव ही नहीं है ।
किसी अन्य लोक से आई हुई है !
इसलिए उसके साथ बातचीत तो हो जाती थी लेकिन उसके आगे उसने कभी कुछ नहीं सोचा .....
समय इसी प्रकार से चलता रहा !

दोनों ने दो साल का कंप्यूटर का कोर्स एडवांस डिप्लोमा इन सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी कर लिया । उसके बाद

कंप्यूटर सेंटर ने दोनों को जॉब ऑफर कर दी । कबीर का जॉब ट्रेनर के तौर पर था और मोनिका को काउंसलर के रूप में नियुक्त किया गया था ।

काउंसलर एक अंग्रेजी टर्म है, इसका मतलब होता है कि जो व्यक्ति कोर्स करने के लिए आया है, या जानकारी लेने के लिए आया है, उसको बात करके अपने सेंटर में कोर्स करने के लिए तैयार करना । यानी कि कुल मिलाकर यू समझे कि काउंसलर का काम है कि किसी भी प्रकार से वह सामने वाले व्यक्ति को कोर्स करने के लिए तैयार कर ले !
ताकि उसके माध्यम से सेंटर को फीस मिल सके ।

उस समय चलन था कि काउंसलर के तौर पर आमतौर पर युवतियों की ही नियुक्ति की जाती । इसकी दो वजह है .....
पहला तो यह कि.....
आमतौर पर जब सामने में महिला बैठी हुई हो.....
और !
वह भी सुंदर और आकर्षक हो ..
तो !

कोर्स में दाखिला लेने या जानकारी लेने के लिए आने वाले युवक और उसके पिता दोनों का आधा ध्यान काउंसलर के ऊपर रहता....
युवक सोचता रहता कि अगर इसे रोज देखने मिले तो मजा आ जाए ।
वही पिता सोचता रहता कि वाह कितनी सुंदर महिला है ! अब इसके आगे की जो भी कल्पना है वह उस व्यक्ति विशेष की मानसिकता और उसकी कल्पनाशीलता के ऊपर निर्भर है .....

तो मोनिका को काउंसलर बना दिया गया और वह इस कार्य में बेहद सक्षम थी । उसे कोर्स और उससे संबंधित संभावनाओं की जानकारी भरपूर थी ! वही बच्चे को इसके आगे अगर किसी प्रकार का कोर्स करना हो तो उसके तरीकों के विषय में भी बेहद सुंदर ढंग से बताना आता था । कुल मिलाकर समझ समझ लीजिए कि मोनिका बतौर काउंसलर एक परफेक्ट कांबिनेशन था ....।
वह बुद्धि और सौंदर्य का एक अद्भुत मिश्रण थी !

कबीर मानिकपुरी हिंदी मीडियम में पढ़ा हुआ बच्चा था और उसकी अंग्रेजी ठीक वैसे ही माशा अल्लाह थी , जैसे आमतौर पर हिंदी मीडियम में पढे हुए बच्चों की होती है !

कंप्यूटर के कोर्स में बहुत सारी चीजें इंग्लिश में सीखनी पड़ती है । जिसमें कबीर को ढेर सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था और ऐसे समय में मोनिका उसकी मदद करती थी । जिससे दोनों के बीच में अच्छी दोस्ती हो गई । मोनिका के साथ रहते-रहते कबीर भी बहुत अच्छी तरह से अंग्रेजी बोलना सीख गया यानी कि आप यूं समझ सकते हैं कि एक देहाती आधा अंग्रेज बन चुका था ।
बाकी का काम कंप्यूटर सेंटर वालों ने पूरा कर दिया था .....
कंप्यूटर सेंटर में अगर आप जाएं तो आपको उस समय एक खास चीज जो दिखाई देती थी वह होती थी कि वहां के सारे टीचर एक विशेष प्रकार के कपड़े पहनते थे और साथ ही टाई भी बांधा करते थे ।

इस प्रकार से हमारा कबीर बोलचाल के साथ ही कपड़ों में भी आधा अंग्रेज हो चुका था ।

गांव में भी उसका रुतबा बढ़ गया था क्योंकि कंप्यूटर नया था तो कंप्यूटर जानने वाले को भी श्रद्धा और सम्मान की नजरों से देखा जाता था,कपड़ों का असर तो खैर था ।

मोनिका यूं तो काफी मॉडर्न थी लेकिन अपनी भावनाओं को एक्सप्रेस करने के मामले में वह भी अन्य लड़कियों की तरह संकोच कर जाती थी ....

और.....

कबीर के पहल करने का तो कोई सवाल ही नहीं था । इसलिए उन लोगों की दोस्ती तो बनी रही लेकिन बात उससे आगे कुछ नहीं बढी ।

कबीर जैसे जैसे अपने काम में आगे बढ़ता जा रहा था, सेंटर की तरफ से उसे कई नई -नई चीजें भी सिखाई जा रही थी ।

उनमें से एक था बैंकों का कंप्यूटराइजेशन ।

यह वह दौर था जब कंप्यूटर धीरे धीरे बैंक के कामकाज में प्रयोग होने लगे थे ।

बैंक का काम बहुत श्रम साध्य नहीं होता, यानी आपको शारीरिक परिश्रम बहुत ज्यादा नहीं करना पड़ता !
लेकिन मानसिक परिश्रम बहुत ज्यादा करना पड़ता है !
उदाहरण के लिए मान लीजिए की आपने दिन भर लेनदेन किया और शाम के समय उस लेनदेन का हिसाब करते समय 50 रुपये की दिक्कत आ जाए ....
तो !
जब तक वह 50 रुपये का हिसाब नहीं मिल जाता तब तक उस दिन की क्लोजिंग नहीं होती थी । इस काम में कई बार आधा-आधा घंटे का समय लग जाता था ।

बैंक के काम लगभग एक ही टाइप के होते हैं जैसे पैसा या तो निकाला जाता है या फिर जमा किया जाता है । यही दो मुख्य कार्य है । जिनको बार बार किया जाता है ।

कंप्यूटर की खासियत यह है कि वह इन दोनों कार्यों को बड़ी आसानी से और एकदम सही ढंग से कर सकता है ।

आदमी और कंप्यूटर में अगर तुलना करें तो उनमे बहुत फरक है । आदमी अगर जोड़ना घटाना करता रहे तो सौ बार हो सकता है सही जोड़ घटाना कर ले !
लेकिन हो सकता है कि वह 101वीं बार कुछ गलती कर जाए ..
उस गलती को फिर वापस ढूंढने के लिए उन सारे जोड़ों को फिर से चेक करना पड़ता है ।

यह दिक्कत कंप्यूटर के साथ नहीं होती क्योंकि वह मशीन है , इसलिए उसके ऊपर थकान का असर नहीं पड़ता और थकान की वजह से उसकी गणना गलत भी नहीं होती । इसी वजह से धीरे-धीरे सारे बैंकों को कंप्यूटराइज्ड कर दिया गया है ।

कबीर के कंप्यूटर सेंटर के मालिक दो लोग थे । एक थे महेश आडील और दूसरे थे विनोद बाजपेई दोनों दोस्त थे और दोनों ही इंजीनियर भी थे । महेश कंप्यूटर साइंस में इंजीनियर थे और विनोद बाबू सिविल इंजीनियरिंग में । कबीर के रूप में उनको एक बहुत बढ़िया सहयोगी मिल गया था । जो कि बुद्धिमान भी था !
कार्य कुशल भी था !

और बहुत ज्यादा सीधा भी .....

वह जो काम कर रहा था ! वह बड़े शहरों में करता तो शायद उसे इससे ज्यादा या दुगनी तन्खा मिल जाती ।

बैंक में सॉफ्टवेयर डालने का काम और वहां के कर्मचारियों को उसकी ट्रेनिंग देने का काम दोनों ही कबीर को सौंप दिया गया था । कबीर हफ्ते में 2 दिन बैंक में ट्रेनिंग देने के लिए जाया करता था । बैंक के काम मे उसे कई बार देर भी हो जाती थी । वह भी वैसा ही एक दिन था । उस दिन लौटते हुए उसे काफी देर हो गई ।

रात गहरा रही थी । लगभग 9:15 बजे का समय हो चुका था । नौकरी मिलने के बाद उसे काफी इधर-उधर घूमना पड़ता था, जिसको देखते हुए सेंटर की तरफ से उसे एक लूना टीएफआर प्लस दी गई थी । यह एक मोपेड थी जो 50 सीसी की हुआ करती थी । इसमें सामने एक सीट होती थी और पीछे वाले को बैठने के लिए एक स्टील प्लेट जैसा हुआ करती थी और कुछ कुछ साइकल से थोड़ी और मोटी दिखाई देती थी । वह

ऐसा समय था जब अधिकांश लोगों के पास गाड़ियां नहीं हुआ करती थी । सौ मे से नब्बे लोग साइकल ही चलाते थे । लूना मिलना कबीर के लिए और भी खुशी की बात थी । वह उसे बहुत लगन से सजा कर रखता । उसी पर बैठकर वह वापस अपने घर की ओर जा रहा था ।

शमशान के पास नदी थी और नदी के ऊपर एक छोटा सा पुल बना हुआ था । उसी पुल के पास जब वह पहुंचा तो उसे शौच की इच्छा हुई । उसने गाड़ी किनारे खड़ी की और नदी की ओर आगे बढ़ गया । शौच से निपटने के बाद वह वापस अपनी गाड़ी के पास पहुंचा गाड़ी स्टार्ट करके जब वह आगे बढ़ने लगा तभी उसने देखा की पुल के पास एक युवती खड़ी हुई है.....

उसकी वेशभूषा किसी ग्रामीण स्त्री की तरह ही थी । कमर में खुसी हुई साड़ी के साथ वह बेहद आकर्षक लग रही थी । कबीर ठिठककर खड़ा हो गया ! उसे समझ में नहीं आया कि इतनी रात को यह युवती यहां पर क्या कर रही है ?

गांव में भूत प्रेत की कहानियां ऐसे भी बहुत ज्यादा प्रचलित होती हैं इसलिए उसके मन में सबसे पहला ख्याल परेतिन का ही आया । कहीं यह कोई भूत प्रेत ना हो ?

डर करवा कुछ देर में ही खड़ा रहा उसके हाथ पैर कांपने लगे लेकिन मान्यताओं के अनुसार प्रेत का पैर उल्टा होना चाहिए ।

उसने देखा तो लड़की का पैर सीधा था ।

गांव में यह भी मान्यता है कि प्रेत के पांव जमीन पर नहीं टिकते । उसने गौर से देखा तो उसके पांव जमीन पर टिके हुए थे । इसे देखकर उसे थोड़ा ढाढस बंधा कि यह प्रेत नहीं इंसान है ।

फिर उसे लगा कि हो सकता है उसे किसी प्रकार की मदद की जरूरत होगी ।

कबीर ने पूछा - क्या हो गया ? इतनी रात को तुम यहां क्यों खड़ी हो

उस ने जवाब दिया - मैं एक अनाथ लड़की हूँ और रहने के लिए कोई जगह ढूंढ रही हूँ । मुझे मेरे मकान मालिक ने घर से निकाल दिया था । ढूंढते ढूंढते मैं यहां तक

पहुंच गई । नदी में पानी पीने के लिए उतरी थी । भूख की वजह से शायद मैं बेहोश हो गई । जब होश आया तो वापस जाने का सोचा लेकिन रात हो गई थी । क्या आप मुझे रात भर के लिए रुकने की जगह दे सकते हैं ?

यह सुनकर कबीर पहले तो थोड़ा झिझका !
फिर उसे लगा कि मजबूर है मदद करनी चाहिए । उसने उसे पीछे बैठ जाने के लिए कहा और उसे लेकर अपने घर की ओर चला गया ।

कबीर अपने घर में अकेले रहता था । उसके पिताजी उसकी मां को छोड़कर दूसरी महिला के साथ बचपन में ही चले गए थे । उसकी मां ने ही उसे पाला पोसा था । इसी साल उसकी मृत्यु हो गई थी । अब वह घर में अकेला था , इसलिए उसे युवति को घर ले जाने में थोड़ी झिझक जरूर हो रही थी लेकिन इतनी रात को उसे इस प्रकार छोड़ देना भी ठीक नहीं लग रहा था । कबीर उसे गाड़ी पर बैठा कर अपने घर की ओर ले चला.....

गांव में रात जल्दी हो जाती है !

लोग बहुत जल्दी सो जाते हैं ।
अब तो समय बदल गया है लेकिन उस समय 8-9 बजे तक अधिकांश घरों की बत्तियाँ बंद हो जाती थी और आधे से ज्यादा लोग सो भी जाते थे । 10 बजे तक तो पूरा गांव सुनसान हो जाता ।
गांव पहुंचते-पहुंचते कबीर को लगभग रात के 10:30 बज गए ।
उसने इधर उधर देखा ....
गली के कुत्तों के अलावा दूर-दूर तक किसी इंसान का नामोनिशान नहीं था ।
उसमें राहत की सांस लेते हुए अपने घर का दरवाजा खोला और उसके साथ वह युवती भी उसके घर में आ गई ।

उसका घर सामान्य सा था जैसा कि आमतौर पर गांव के घर हुआ करते थे । उसके साथ लगा हुआ लगभग 1000 स्क्वायर फिट का आंगन भी था । घर के अंदर कुआं बना हुआ था । दो साल पहले मां की पैर की हड्डी टूट गई थी इसलिए उसे बाहर जाने में दिक्कत होती थी । यह देखते हुए कबीर ने अपने घर के अंदर

ही एक शौचालय भी बनवा दिया था, जिसकी वजह से अब उसे भी बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती थी । रात ज्यादा हो चुकी थी । घर मे सुबह का कुछ भोजन बचा हुआ था उसे खाने के लिए देने के बाद ,युवती को मां के कमरे में सोने के लिए बोल कर वह अपने कमरे में चला गया ।

अगले दिन कबीर सो कर उठा तो सुबह के 5 बज चुके थे !

हल्की-हल्की रोशनी दिख रही थी ।

शहर के हिसाब से यह जल्दी उठना था । लेकिन गांव के हिसाब से यह लेट उठना माना जाता , क्योंकि गांव में सुबह लगभग 4 बजे से हो जाती है और अधिकांश लोग उठ जाते हैं ।

महिलाएं हल्के अंधेरे में नित्य कर्म से निपटने के लिए चली जाती हैं ।

किसान खेत में पानी डालने के लिए उसी समय का उपयोग करते हैं ।

कुल मिलाकर अधिकांश लोग सुबह ब्रह्म मुहूर्त में ही उठ जाते हैं ....

कबीर जब बाहर निकला तो उसने देखा कि वह युवती कुएं से पानी निकाल रही है । यह देखकर वह अपना दातुन लेकर बाहर निकल गया । गांव में दातून से दांत साफ करने की परंपरा है । आमतौर पर नीम और बबूल के दातुन का प्रयोग किया जाता है । यह लगभग उंगली के आकार की डंडी होती है, जिसे चबा चबा कर सामने के हिस्से को एकदम ब्रश के जैसे सॉफ्ट कर लिया जाता है और फिर उससे दांतों को साफ किया जाता है । इस प्रक्रिया में कम से कम 5 मिनट का समय लगता है । वही प्रक्रिया पूरा करने के लिए पीछे की तरफ निकल गया ।

जब वह वापस लौटा तो उसकी आंखें फटी की फटी रह गई क्योंकि जो दृश्य उसके सामने था वह किसी भी युवक के लिए वैसा ही प्रभाव उत्पन्न कर देता.....

वह युवती कुएं के पास पूर्ण निर्वस्त्र अवस्था में बैठी हुई नहा रही थी । गांव में आमतौर पर स्त्रियाँ पूर्ण निर्वस्त्र होकर नहीं नहाती । वे लहंगे या पेटीकोट को स्तनों के ऊपर तक उठाकर बांध लेती है जिससे उनके स्तन

और नितंब वाला हिस्सा उसके अंदर छिप जाता है और उसके बाद वे स्नान करती है । लेकिन यह स्त्री तो पूर्ण निर्वस्त्र होकर स्नान कर रही थी और ऐसा दृश्य कबीर के लिए आकर्षक भी था और नया भी ..

थोड़ी देर में उसे लगा कि वह गलत कर रहा है तभी उस युवती की आंखे उससे टकरा गई !

उसने हड़बड़ा कर आंखें फेर ली और वहां से चला गया !!

लेकिन....

उसकी मादक देहयष्टि उसके मन में हलचल पैदा कर गई ।

वह जल्दी से कमरे के अंदर तो चला गया लेकिन खिड़की की दरार में से उस दृश्य का आनंद लेता रहा । जैसे जैसे वह उसे देखता जा रहा था । उसके शरीर में उत्तेजना की लहर बढ़ती जा रही थी ।

तब तक उसका स्नान पूरा हो चुका था और वहां पड़े हुए तौलिए से वह अपने शरीर को रगड़ रगड़ कर पोंछ रही थी ।

उसे अपने शरीर को छुपाने की कोई इच्छा दिखाई नहीं दे रही थी । उसने अपने शरीर के हर अंग को बड़े आराम से रगड़ रगड़ कर पोछा और उसके बाद उसी कमरे की ओर बढ़ गई .... जहां पर कबीर बैठा था ।

कबीर के दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी..... उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे ?
उत्तेजना ने उसके मस्तिष्क पर पूरा कब्जा कर लिया था और वह कामोन्माद से भर चुका था ।
युवती साड़ी लपेटकर उसके कमरे में आ गई और धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगी । कबीर किसी पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा हुआ था । वह युवती ना जाने किस भावना के वशीभूत होकर आकर उससे लिपट गई ।

जैसे ही वह उस से लिपटी कबीर का सारा नियंत्रण छूट गया और दोनों साथ लगे हुए बिस्तर पर आगे की क्रियाओं में मग्न हो गए ।

कबीर को उस आनंद की प्राप्ति हुई जिसका उसने अभी तक स्वाद नहीं चखा था । उस वर्जित फल का स्वाद

चखने के बाद आज तक कोई भी संयमित नहीं रह सका है तो कबीर किस खेत की मूली था .....

उस दिन वह कंप्यूटर सेंटर भी नहीं गया । पूरा दिन दोनों ने भरपूर यौवन की होली खेली । इस बीच इस युवती ने उसे खाना भी बना कर खिलाया । आमतौर पर कबीर खुद अपने लिए खाना बनाता था । उसे इस प्रकार से भोजन मिलना अच्छा लगा । थक कर दोनों दोपहर को गहरी नींद में सो गए । कबीर का पूरा शरीर ढीला पड़ चुका था । शाम के लगभग 5:30 बजे युवती ने चाय के प्याले के साथ कबीर को उठाया ।

कबीर ने चाय पीते पीते उससे पूछा - तुम्हारा नाम क्या है ?

युवती ने बताया - मीना !

कबीर ने उसे बाहों मे लपेटते हुए पूछा - अब बताओ तुम्हारे साथ क्या हुआ ?

मीना - बहुत लंबी कहानी है सुनते सुनते रात हो जाएगी ।

कबीर - कोई बात नहीं, फिर भी मैं सुनना चाहूंगा ।

मीना - तो सुनो ! उस समय मेरी उम्र लगभग 19 साल रही होगी ! मैं उस समय बीए फर्स्ट ईयर में पढ़ती थी । मेरे पिताजी किराना व्यापारी थे । उनकी दुकान अच्छी चला करती थी । माँ एक स्कूल में टीचर थी और मैं उनकी इकलौती बेटी थी ।

दुकान में दो नौकर थे, उनमें से एक था सुनील , और एक था मोहन । दोनों पक्के दोस्त थे । जब घर में कोई काम पड़ता था तो पिताजी नौकरों में से किसी ना किसी को भेज दिया करते थे और वह घर का काम करके चला जाया करता ।

सुनील किसी फिल्मी हीरो की तरह दिखता था और लगभग 25 साल की उम्र का युवक था । मोहन भी लगभग उसी के उम्र का था और सांवले रंग का थोड़े अजीब से चेहरे का युवक था । उसके चेहरे के बाएं ओर चोट के निशान थे जो उसे थोड़ा और अजीब बना देते थे ।

सुनील मे वह सब कुछ था जो देखकर कोई युवती उसकी ओर आकर्षित हो सकती थी । लगभग साढे पाँच फुट लंबा सुनील मजबूत कद काठी का युवक था और साथ ही बेहद विनम्र भाषा में बात भी करता था । धीरे-धीरे मैं उसकी ओर आकर्षित होती चली गई और एक बार जब हम दोनों घर पर अकेले थे तो हमने सारी सीमाएं पार कर दी । शरीर का सुख जब मिलता है तो फिर कुछ समझ नहीं आता ।

कुछ दिन तक इसी प्रकार छुप छुप कर कार्यक्रम चलता रहा .....

कहा जाता है कि इश्क और मुश्क छुपाए नहीं छुपते !!!!
एक दिन जब हम दोनों अपने अभियान मे लगे हुए थे तो अचानक माँ स्कूल से जल्दी वापस लौट आई । दरवाजा खोलने मे देर हो गई और अंदर हम दोनों को देखकर उनको गड़बड़ी का पता चल गया और मेरी पहली बार भरपुर पिटाई हुई । शाम को पिताजी ने भी जमकर कुटाई की और अगले दिन से मेरा घर से निकलना बंद कर दिया गया ।

उस समय इस प्रकार की बातों का पता चल जाने से लड़की के विवाह में गंभीर दिक्कतें आ जाती थी । जिसे देखते हुए मामले को दबा दिया गया । सुनील की भी जमकर पिटाई हुई और सुनील को नौकरी से निकाल दिया गया ।

मेरे लिए रिश्तो की तलाश शुरु हो चुकी थी और घरवाले जल्द से जल्द शादी कर देना चाहते थे । आनन-फानन में डेढ़ महीने के अंदर मेरी शादी मुझसे लगभग 15 वर्ष बड़े एक विधुर से कर दी गई । उसका नाम था राम गोपाल गुप्ता । उसकी किराना दुकान थी और वह रायपुर में रहता था ।

आमतौर पर इस प्रकार के संबंधों में जो सबसे बड़ी बात होती है वह होता है शारीरिक सुख !
उसी के आकर्षण में धीरे-धीरे संबंध आगे बढ़ते जाते हैं । विवाह होने के बाद पति ने मुझको वह सुख दिया और मैं धीरे-धीरे सुनील को भूलने लगी । सब बढ़िया चल रहा था .....

शादी के बाद लगभग साल भर का समय बीत चुका था और दीपावली आने वाली थी । घर की साफ सफाई जैसा कि आमतौर पर सभी लोग करते हैं उसे करने के लिए मेरी सास ने दुकान से किसी नौकर को भेजने के लिए कहा । पति ने अगले दिन सुबह नौकर को भेज दिया .....

वहां से मेरी कहानी में ट्विस्ट आना प्रारंभ हो गया । जो नौकर घर पहुंचा था वह था सुनील !!!

सासु मां को मोतियाबिंद था । उन्हें बहुत साफ दिखाई नहीं देता था ।
नीचे की सफाई होने के बाद ऊपर की मंजिल की सफाई करने के लिए उसने मुझे साथ जाने के लिए कहा ।
ऊपर की मंजिल पर पहुंचने के बाद पुरानी कहानी फिर से प्रारंभ हो गई .....
अब बीच-बीच में सुनील का घर में आना जाना लगा रहता....
और उसके आने का मतलब आप समझ ही गए होंगे....

लगभग 6 महीने तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा

...

लेकिन ..

फिर सासु मां को कुछ शक होने लगा...

एक दिन सुनील के आने पर जब हम ऊपर के कमरे में आए हुए थे तो पड़ोस की कामवाली को ऊपर देखने के लिए भेज दिया ।

वह जब कमरे में आई तो हम दोनों अपने कार्यक्रम में लगे हुए थे । उसने सब कुछ जाकर नीचे सासु मां को बता दिया । सुनील के जाने के बाद सासू मां ने दरवाजा बंद किया और मुझे खींच कर चार थप्पड़ मारे ।
पति के आने पर उन्हें भी सारी बात बताई । उन्होंने भी मेरी पिटाई की और मुझे घर से निकाल दिया गया ।
वहां से निकलने के बाद जब मैं अपने घर पहुंची तो घर तक भी सारी खबर पहुंच चुकी थी !

मां बाप ने भी मुझे घर में घुसने नहीं दिया ।

अब इस दुनिया में मेरे रहने के लिए कोई जगह नहीं है ! अगर आप मुझे अपने साथ रख लोगे तो मैं घर का ख्याल भी रखूंगी और नौकरानी की तरह एक कोने में पड़ी रहूंगी ....

सारी कहानी सुनकर कबीर की समझ में आ गया कि यह काफी चोट खाई हुई युवती है और परेशानी मे है । ऐसे मे उसे अकेला छोड़ देना उसके लिए संकट का द्वार खोल सकता है और वह बड़ी मुसीबत में भी फंस सकती है ।

जब उसने थोड़ा और दिमाग लगाया तो उसे लगा कि मीना के द्वारा दिया गया ऑफर भी काफी आकर्षक है । जब तक माताजी जिंदा थी तब तक वह उसके खाने-पीने की जिम्मेदारी पूरी किया करती थी । उसे कुछ भी नहीं देखना पड़ता था । केवल सामान लाना उसकी जिम्मेदारी में आता था । उनके जाने के बाद से सब कुछ करते करते वह भी परेशान हो चुका था । यहां तो बैठे-बैठे सब कुछ मिल रहा था । खाना बनाने के लिए और घर की साफ सफाई के लिए एक नौकरानी ....

और साथ ही बोनस मे देहसुख भी !!!

सोच विचार के बाद कबीर को यह ऑफर बड़ा ही आकर्षक लगा । उसने उसे घर में रहने की जगह दे दी । कबीर का घर गांव के छोर पर बसा हुआ था और आमतौर पर कोई उसके घर में आता जाता भी नहीं था । इसलिए उसने सोचा कि कुछ दिन देख ही लिया जाए ।

मीना ने शाम को भी बढ़िया खाना बना कर खिलाया । जिसे खाकर कबीर भी तृप्त हो गया । उसने आभार भरी निगाहों से उसकी तरफ देखा । वह मुस्कुरा कर चली गई ।

रात के 9 बज़ चुके थे ।

कबीर अपने बिस्तर पर लेट कर नींद आने की प्रतीक्षा कर रहा था .....

तभी मीना कमरे में आई .....

उसके हाथ में दूध का गिलास था !

कबीर को ऐसा लगा जैसे वह कहीं वह स्वर्ग मे तो नहीं आ गया ।

दूध का असर कहिए या मीना की समीपता का असर कबीर फिर से उत्तेजित हो गया और फिर रात भर यही कहानी चलती रही.....

कबीर अगले दिन से फिर काम पर जाने लगा । सुबह उसे मीना डब्बा बना कर देती और वह उसे लेकर कोचिंग सेंटर की ओर रवाना हो जाता । पहले रुखा सुखा भोजन खाने वाला कबीर अब कई प्रकार के स्वादिष्ट भोजन का स्वाद ले पाता और उसे इस में बड़ा आनंद आ रहा था ।

जब कोई युवक अकेला होता है, और उसे अपने खाने पीने की व्यवस्था स्वयं करनी होती है, तो उसे घर आने की कोई खास जल्दी नहीं होती है ।

उसकी कोशिश यह होती है कि खाना भी वह बाहर ही खा ले । बड़े आराम से जब तक हो सके बाहर समय गुजारने की कोशिश करता है । थक हार कर घर लौटता है । उसके बाद बिस्तर पर पड कर सो जाता है । यही आम तौर पर होता है ।

जब परिस्थितियां बदल जाती हैं और उसे यह मालूम होता है कि घर पहुंचने के बाद उसे किसी का सुखद सानिध्य प्राप्त होगा !
काम सुख मिलेगा .....
तो वह कोशिश करता है कि जितनी जल्दी हो सके घर पहुंच जाए । इस युवती के आने के बाद कबीर के साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा था !

युवावस्था थी !

दोनों लगभग हम उम्र थे ।

जीवन मे 18 से 30 वर्ष की आयु ऐसी आयु होती है, जब शरीर में यौवन फूट फूट कर भरा होता है !
वह किसी भरे हुए बांध की तरह उमड़ घुमड़ कर निकलने को आतुर होता है !
दोनों अपने यौवन के पूर्ण आवेग में थे और उसका भरपूर उपयोग कर रहे थे !
लगभग 6 महीने तक ऐसा ही चलता रहा ।

छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख शिवतीर्थ है राजिम !

यहाँ के प्रसिद्ध राजीव लोचन मंदिर में भगवान विष्णु प्रतिष्ठित हैं। प्रतिवर्ष यहाँ पर माघ पूर्णिमा से लेकर शिवरात्रि तक एक विशाल मेला लगता है। यहाँ पर महानदी, पैरी नदी तथा सोंढुर नदी का संगम होने के कारण यह स्थान छत्तीसगढ़ का त्रिवेणी संगम कहलाता है।

संगम के मध्य में कुलेश्वर महादेव का विशाल मंदिर स्थित है। कहा जाता है कि वनवास काल में श्री राम ने इस स्थान पर अपने कुलदेवता महादेव जी की पूजा की थी। इस स्थान का प्राचीन नाम कमलक्षेत्र है। ऐसी मान्यता है कि सृष्टि के आरम्भ में भगवान विष्णु के नाभि से निकला कमल यहीं पर स्थित था और ब्रह्मा जी ने यहीं से सृष्टि की रचना की थी। इसीलिये इसका नाम कमलक्षेत्र पड़ा।

यहां पर शिवरात्रि के अवसर पर काफी बड़ा मेला लगता है । कबीर शिवरात्रि को राजिम गया उसने मीना को साथ चलने के लिए कहा लेकिन वह नहीं गई । कबीर अकेले मेला चला गया । विभिन्न मंदिरों में पूजा अर्चना करके जब वह वापस लौटा तो मीना गायब हो चुकी थी ....

उसने उसे ढूंढने का काफी प्रयास किया !
लेकिन वह नहीं मिली !!
मीना कहीं जा चुकी थी ।
कबीर ने उसे तलाशने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं मिली ।
कबीर को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहां चली गई । उसने अपनी तरफ से उसे खोजने की हर संभव कोशिश की !
लेकिन.....
मीना को नहीं मिलना था तो वह नहीं मिली ।

कबीर को मीना का इतिहास पता था तो उसे लगा कि हो सकता है कि वह फिर से वापस चली गई हो । यह अपने आप को दिलासा देने जैसी वाली बात थी लेकिन कबीर के पास कोई दूसरा रास्ता भी नहीं था ।
मीना के जाने के बाद उसके जीवन में वापस वही वीरानी छा गई ।

यह स्थिति कबीर के लिए बेहद तकलीफ देह थी ।
इसलिए नहीं कि वह उसे छोड़ कर चली गई, बल्कि

इसलिए ज्यादा कि अब उसे काम सुख प्राप्त नहीं हो रहा था जिसका वह आदी हो चुका था ।

वर्जित फल का स्वाद जब तक पुरुष स्त्री नहीं चखते हैं तब तक उनका आत्म नियंत्रण काफी तगड़ा रहता है । जब एक बार इसकी आदत पड़ जाती है तो मन में उसे पुनः प्राप्त करने की इच्छा लगातार बनी रहती है और यथासंभव कोशिश चलती रहती है कि किसी प्रकार से वह सुख वापस प्राप्त हो जाए !
कबीर की भी इच्छा बनी रहती थी लेकिन आत्म संतुष्टि के अलावा उसके पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था ।
समय और परिस्थितियां नए नए संयोग को जन्म देती रहती है .....

एक दिन जब कबीर बैंक से ट्रेनिंग की प्रक्रिया पूरी करके वापस लौटा तो पूरा सेंटर खाली हो चुका था .....
लेकिन मोनिका वहां पर मौजूद थी !
संभव है उसे कुछ काम बाकी रह गया होगा । कबीर पहले मोनिका की ओर विशेष आकर्षण नहीं रखता

था , लेकिन जब से उसे स्त्री सुख की प्राप्ति हुई है तब से वह उसे तिरछी नजरों से निहारना प्रारंभ कर चुका था ! मोनिका पहले से ही उसके प्रति आकर्षित थी !

चौकीदार के घर से उसकी पत्नी के बीमार होने का फोन आया था जिसके वजह से मोनिका ने उसे घर भेज दिया था ।

उस दिन सेंटर खाली था !

जब कबीर सेंटर में आया तब तक मोनिका का काम भी पूरा हो चुका था !

कबीर ने अपने सॉफ्टवेयर की कॉपी तथा अन्य सामान लॉकर में रखा और वापस जाने के लिए तैयार होने लगा ।

मोनिका भी अपना काम खत्म करके उसके पास आ चुकी थी और दोनों के बीच बातचीत चल रही थी ।

बातचीत करते करते मोनिका कबीर के काफी करीब आ चुकी थी ।

मोनिका की आंखों में चाहत स्पष्ट दिखाई दे रही थी , जिसे अब कबीर भी समझ सकता था और अंततः वही

हुआ जो ऐसी परिस्थितियों में होता है दोनों के बीच में संबंधों का प्रारंभ हो गया है.....

धीरे-धीरे दोनों इसी प्रकार से अवसर निकालकर एक दूसरे के देह की सीमाओं को नापने लगे ! कुछ महीनों तक ऐसा ही चलता रहा ....

एक स्थिति ऐसी आई कि दोनों ने विवाह करने का फैसला कर लिया !
दोनों का कोई मेल नहीं था !
इसलिए मोनिका कबीर के रिश्ते को पहले मोनिका के परिवार वालों ने रोकने की यथासंभव कोशिश की ।
जब मोनिका किसी भी प्रकार से मानने को तैयार नहीं हुई तो उन्होंने अपना आखिरी दांव खेला और मोनिका से कह दिया कि अगर तुम कबीर से रिश्ता रखोगे तो हम तुम से अपना रिश्ता तोड़ देंगे ।

यह एक बहुत गंभीर और जटिल स्थिति थी, क्योंकि मोनिका जिस प्रकार के जीवन की आदी थी; उस प्रकार का जीवन दे पाने में कबीर सक्षम नहीं था ।

कबीर विशुद्ध देहाती परिवेश में रहने वाला एक व्यक्ति था, जिसके साथ अत्याधुनिक विचारधारा वाली मोनिका का कोई मेल नहीं था । उसके परिवार का यह मानना था कि मोनिका कबीर के साथ बहुत दिन निभा नहीं पाएगी ..
परिवार के द्वारा की गई है भविष्यवाणी फेल हो गई ....
दोनों के बीच में आत्मीयता भी थी और प्रेम भी था और एक दूसरे को काफी सालों से जानने की वजह से वह एक दूसरे की कमजोरियों को भी स्वीकार करने की स्थिति में थे ।

आमतौर पर प्रेम विवाह के टूटने की वजह यह होती है कि जब प्रेमी प्रेमिका प्रेम प्रसंग की स्थिति में होते हैं तो वे अपना सबसे अच्छा स्वरूप दिखाने की कोशिश करते हैं । उनके अंदर एक दूसरे को खुश रखने और प्रभावित करने का प्रबल आग्रह होता है । जिसकी वजह से वे ऐसा कोई कार्य नहीं करते जो दूसरे सहयोगी को पसंद ना हो, जिस से संबंध मजबूत होते जाते हैं ।

जैसे ही विवाह संपन्न हो जाता है तो उनका वास्तविक स्वरूप सामने आ जाता है । उनको लगने लगता है कि अब यह सब करने की क्या जरूरत है ?
एक दूसरे की अच्छाइयों से ज्यादा कमजोरियां और कमियां दिखाई देने लगती है तब उनके बीच दूरियां पैदा होने लगती है ..
मोनिका और कबीर के बीच में ऐसा कुछ नहीं था दोनों के बीच में काफी अच्छी अंडरस्टैंडिंग थी । कबीर के लिए वह किसी राजकुमारी से कम नहीं थी और वैसा ही वह उसका ख्याल रखता ।
अंततः दोनों ने कोर्ट मैरिज कर ली ।

शादी होकर मोनिका गांव आ गई अब गांव से ही दोनों एक साथ सेंटर जाते । मोनिका ने शुरू में काफी दिक्कत महसूस की , लेकिन धीरे-धीरे वह भी गांव के वातावरण में रम गई ।

गांव वाले भी आश्चर्यचकित थे कि इतने आधुनिक परिवेश वाली लड़की कबीर जैसे आदमी के साथ कैसे निभा रही है । मोनिका काफी व्यवहार कुशल और

अच्छे स्वभाव की लड़की थी । उसने कबीर को और उसके परिवेश को अपना लिया ।

यह देखकर गांव वाले भी उसे बहुत पसंद करने लगे थे ।

छत्तीसगढ़ के लोग बेहद सरल और सहृदय होते हैं । वे इतने सरल होते हैं कि आप सोच भी नहीं सकते ! बिल्कुल ठेठ ग्रामीण परिवेश की जो परिकल्पना है उसी के अनुसार । जीवन से भरे हुए और दूसरों के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना से ओतप्रोत । अगर आप किसी अनजान व्यक्ति के यहां गांव में पहुंचेंगे और पानी पीने की इच्छा व्यक्त करेंगे तो आपको शायद यकीन नहीं होगा कि अगर उसके घर में कुछ मीठा रखा होगा तो आपके बिना बोले ही पानी के साथ वह मीठा भी आपके सामने आ जाएगा ।
यानी हर किसी को अपना मानने की जो भावना है ..... वसुधैव कुटुंबकम की .....
वह छत्तीसगढ़ के ग्रामीण अंचल में हर तरफ दिखाई देती है और यही यहां की मिट्टी का सौंदर्य है ।

मोनिका को धीरे-धीरे यह बात समझ में आने लगी थी ! उसने उनकी उदारता और सहृदयता को पूरे हृदय से स्वीकार कर लिया था । जिसके चलते गांव वाले भी अब उसे बहू के रूप में स्वीकार कर चुके थे ।

कबीर तो खैर उस पर लट्टू था ही ....

दोनों का जीवन बेहद अच्छे ढंग से चल रहा था विवाह को लगभग 3 माह बीत चुके थे ।

दोनों सेंटर से आते रात्रि भोजन के बाद फिर नित्य का कार्यक्रम चालू हो जाता और दोनों ही संतुष्ट होकर तृप्त होकर सो जाते ! यह उनका रोज का रूटीन बन गया था !

दोनों बेहद खुश थे !

मोनिका के घर वालों तक भी यह खबर पहुंची । उन्हे विश्वास नहीं हुआ कि उनकी आधुनिक विचारधारा वाली लड़की किसी गांव में जाकर इतनी सहजता से सेटल हो सकती है । यह धीरे-धीरे कई लोगों से सुनने के बाद उनकी विचारधारा भी कबीर के प्रति बदलने

लगी और एक दिन अचानक मोनिका के मां-बाप रविवार के दिन उनके घर पहुंच गए ।

उन्हें अचानक सामने देखकर कबीर हक्का-बक्का रह गया । उसके पीछे पीछे मोनिका भी आई और अपने माता पिता को सामने देखकर खुशी के मारे उछल पड़ी ! माता पिता ने उसे गले से लगा लिया और रोने धोने का एक लंबा सिलसिला चला । इसके बाद संबंध सामान्य होते चले गये । उन्होंने कबीर को स्वीकार कर लिया ।

प्रेम विवाह को जब दोनों परिवार स्वीकार कर लेते हैं तो प्रेमी जोड़े को भी अच्छा लगता है ! आत्म संतुष्टि होती है कि उन्होंने कुछ गलत नहीं किया । अन्यथा यह आत्मग्लानि कहीं ना कहीं अंदर कचोटती रहती है..... कोई उसे व्यक्त कर देता है ...

और अधिकांश लोग व्यक्त नहीं करते हैं लेकिन अपने परिवार से अलग होने का और उनसे संबंध टूट जाने का दुख तो होता ही है ।

लगभग साल भर बीतने के बाद एक रात वे दोनों वापस घर लौट रहे थे ।

वह अमावस की रात थी !

घनघोर अंधेरा छाया हुआ था !

गांव से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर लूना खराब हो गई । काफी प्रयास करने के बाद भी लूना स्टार्ट नहीं हुई । लूना में एक विशेष सुविधा यह रहती थी कि आप उसे एक बटन दबाकर साइकिल की तरह चला कर भी ला सकते थे । उस बटन को दबाने से पीछे का चक्का इंजन से फ्री हो जाता था ।

कबीर मोनिका को बिठाकर इसी प्रकार से आ रहा था । नदी के पास पहुंचते-पहुंचते कबीर को लघु शंका की इच्छा हुई । गाड़ी रोक कर वह एक किनारे खड़ा होकर लघु शंका से निपट रहा था । मोनिका टहलते टहलते शमशान के पास तक पहुंच गई और अचानक उसे एक झटका सा लगा और उसका सिर चकराने लगा । उसे ऐसा लगने लगा कि वह बेहोश हो जाएगी । वह वही पास के बिजली के खंबे के पास टिक कर खड़ी हो गई ! उसे ऐसा लगा जैसे वह कुछ क्षणों के लिए बेहोश हो गई हो ।

तब तक कबीर वापस आ चुका था उसे इस तरह से खड़ा देखकर उसने पूछा - क्या हो गया ?

मोनिका - कुछ नहीं हुआ । चलो चलते हैं । इतना बोलकर गाड़ी के पीछे बैठ गई ।

कबीर लूना चलाते हुए घर आ गया । घर आने के बाद दोनों ने भोजन किया और रात्रि कालीन प्रकरणों के लिए आगे बढ़ गए ।

उस रात को जब दोनों संलग्न थे, तभी कबीर को आभास हुआ कि आज मोनिका के व्यवहार में बहुत ज्यादा उन्मुक्तता दिखाई दे रही है ।

कमरे मे अजीब सी अनजानी खुशबू फैली हुईं थी .....

कबीर को लगा कि यह आपस में काफी दिनों से संबंधित होने की वजह से हो रहा होगा ।

इसलिए उसने ज्यादा ध्यान नहीं दिया और उस आनंद में डूबता चला गया ।

अधिकांश पतियों को यह शिकायत होती है कि पत्नियां बिस्तर पर पूरा सहयोग नहीं करती या खुलकर साथ नहीं देती जिसकी वजह से उन्हें आनंद कम आता है ।

जब कबीर को मोनिका का यह उन्मुक्त स्वरूप दिखा तो उसे और ज्यादा आनंद की अनुभूति होने लगी ....

समय के साथ धीरे-धीरे इसकी तीव्रता बढ़ने लगी !

अब मोनिका की इच्छा की पूर्ति करना कबीर के लिए मुश्किल होने लगा !
अजीब बात यह थी कि जब भी वे दोनों इस प्रकार से संलग्न होते थे तो कमरे में वही अजीब सी अनजानी खुशबू फैल जाती थी ....

कुछ दिनों के बाद उसे ऐसा लगने लगा जैसे मोनिका के साथ से उसमें कमजोरी की मात्रा बढ़ती जा रही है लेकिन कबीर ने बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दिया ।

इसी प्रकार से लगभग साल भर का समय बीत गया । मोनिका दिनभर सामान्य व्यवहार करती । लेकिन जब रात का समय आता है तो अत्यंत कामुक स्त्री की तरह व्यवहार करती जिसे संभालने में कभी-कभी कबीर को मुश्किल हो जाती ।

कई बार उसे शक होता कि कुछ तो गड़बड़ है !
अगले दिन मोनिका का व्यवहार देख कर उसे लगता कि नहीं सब ठीक है ऐसा ही चल रहा था ।

वह एक रविवार का दिन था और कबीर और मोनिका दोनों थक गए कर चूर हो गए थे और सुबह जल्दी ना उठने के मूड में पड़े हुए थे ...
ऐसे ही 10 बज गए ।
तभी ....
दरवाजे पर दस्तक हुईं ।

तीसरी बार दस्तक हुईं तो कबीर बेमन से उठकर दरवाजा खोलने गया । पड़ोस का लड़का सामने खड़ा हुआ था उसने बताया कि सरपंच की पत्नी का देहांत हो गया है और थोड़ी देर में शव यात्रा निकलने वाली है । सरपंच एक अत्यंत ही सज्जन किस्म का बुजुर्ग व्यक्ति था । कबीर उसके प्रति बेहद सम्मान का भाव रखता था । उसकी परेशानियों में सरपंच ने कई बार उसकी मदद की थी । सरपंच की पत्नी उसे अपने बेटा जैसा मानती थी ..... इसलिए शव यात्रा में जाना जरूरी था ।
कबीर शव यात्रा में शामिल होकर श्मशान घाट तक पहुंच गया । जब वह श्मशान घाट में पहुंचा तो उसे वही चिर परिचित खुशबू .....
अजीब सी अनजानी .....

खुशबू आने लगी.....

वह हैरान हो गया क्योंकि यह बिल्कुल वैसी ही खुशबू थी जैसी मोनिका के साथ संबंधों के समय आती थी .....

उस रात को तो मोनिका ने उसे निचोड़कर रख दिया । सुबह उसे ऐसा लगा जैसे उसके अंदर प्राण ही नहीं बचे ....

उसे अब लगने लगा कि वास्तव मे कुछ गड़बड़ है ! अगले दिन उसने अपने मित्र विनोद को इसके बारे मे बताया ....

विनोद ने उसकी सारी बात सुनी और उसे भी संदेह हुआ कि कुछ तो गड़बड़ है । अब इस समस्या का समाधान ढूंढना था.....

विनोद के परिचय में एक बैगा बाबा थे । छत्तीसगढ़ में तांत्रिकों को बैगा कहा जाता है । दोनों उसी दिन उनसे मिलने पहुंचे । बाबा का नाम था समारु बैगा !

बैगा बाबा ने अपनी प्रक्रिया संपन्न की और उसके बाद बताया कि कुछ दिक्कत है और मोनिका के ऊपर बाहरी

हवा का असर है ! अर्थात उसके ऊपर किसी प्रकार की प्रेतात्मा का असर हो गया है जिसके चलते ऐसा हो रहा है ।

इसके समाधान का मार्ग पूछने पर बाबा ने ₹500 का खर्च बताया । उस समय के हिसाब से ₹500 काफी बड़ी रकम हुआ करती थी , तो कबीर थोड़ी सी सोच में पड़ गया और उसने बाबा से विदा लेकर बाद में आने का कह दिया ।

दोनों वहां से बाहर निकले । कबीर और विनोद के बीच में चर्चा हुई । विनोद भी किसी प्रकार की गारंटी देने की स्थिति में नहीं था , क्योंकि ऐसे समाधान का सारा कार्यक्रम केवल विश्वास पर चलता है ।

बहुत सारे लोग इसका फायदा उठाते हैं और लोगों को 24 घंटे मे वशीकरण की गारंटी जैसे दावे करके आज भी लूटते हैं । इसलिए सामान्यतः लोग किसी पर विश्वास नहीं कर पाते हैं । ....

उस दिन कबीर वापस घर आ गया । बैगा बाबा की बात उसके दिमाग में बैठ चुकी थी । मोनिका का असामान्य व्यवहार उसे काफी दिनों से परेशान कर रहा था ।

अब उसे रात डरावनी लगने लगी थी और मोनिका के साथ के विषय मे सोचने मात्र से उसके शरीर में झुरझुरी आने लगती थी ।

उसके पास कोई रास्ता नहीं था क्योंकि जब वह मोनिका के साथ होता था तब वही होता था जो मोनिका चाहती थी .....

ना चाहते हुए भी उसे वह सब कुछ करना पड़ता था !

और तब तक.....

जब तक मोनिका स्वयं उसे मुक्त ना कर दे । अंततः उसने यह तय किया कि एक बार बैगा से उपाय करा कर देख लिया जाए । उसने पुनः समारु बैगा से संपर्क किया और अगली अमावस्या को समाधान के लिए बैगा कबीर के घर आने पर सहमत हो गया ।

बैगा अमावस्या की शाम को कबीर के घर पर पहुंच गया । अमावस्या की रात आई । बेगा ने एक चौकोन आकार बनाया और उसके बीच में मोनिका को बिठा दिया ।

रात के लगभग 10 बजे का समय हो चुका था वह समय जब मोनिका के अंदर फर्क दिखाई देने लगता था.....

रात हो चुकी थी .....

इसलिए पूरा गांव सो चुका था ।
जैसा कि मैंने पहले ही बताया था कबीर का घर गांव के छोर में पडता था । इसलिए वहां होने वाले शोरगुल को आसानी से दूसरा कोई नहीं सुन सकता था ।

गांव के लोग बैगा से कुछ ज्यादा ही डरते हैं । इसलिए उसके आने से उनको समझ में आ गया था कि कबीर के घर में कुछ क्रियाकलाप होने वाला है ।
उससे बचने के लिए घर पर ही रहना है ...
इस मानसिकता में आसपास के लोग और जल्दी सो गए या यूं कहिए कि दरवाजा बंद करके घर के अंदर हो गए ।

चौखाने के अंदर बैठी हुई मोनिका का शरीर थरथर कांपने लगा !
उसके शरीर को थरथराते देखकर बैगा को समझ में आ गया कि अशरीरी शक्ति उसके शरीर में प्रवेश कर चुकी है ।
अब उसे वश में करने के लिए या उसकी वास्तविकता को जानने के लिए यह जरूरी था कि उसे उस चौखाने के अंदर बंधन करके रख दिया जाए ।

किसी भी शक्ति को बंधन करने के लिए बंधन करने वाले व्यक्ति के अंदर साधनात्मक क्षमता होनी चाहिए । अगर ऐसा नहीं हुआ तो वह शक्ति उस बैगा को ही समाप्त कर देगी ।

जिस मंत्र को उसने सिद्ध किया हुआ होता है उसी मंत्र के माध्यम से बंधन संपन्न करता है । बैगा ने कुछ अजीब किस्म के मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने झोले में हाथ डाला और उसमें से चार हड्डियां निकाली । हड्डियों का आकार देखकर ऐसा लगता था जैसे वे किसी जानवर की हड्डियां हो.....

उन हड्डियों को देखकर मोनिका के चेहरे के भाव बदलने लगे । अचानक बैगा अपने स्थान से उठा और बिजली की तेजी से उसने उस चौखाने का एक गोल चक्कर लगाया ।

अचानक हुए इस घटनाक्रम को कबीर समझ नहीं पाया !

लेकिन जब वह गोल घेरा काट कर वापस अपने स्थान पर पहुंचा .....
तब कबीर ने देखा कि चौखाने के हर कोने पर एक एक हड्डी रखी हुई है ।

बैगा ने उस चौखाने को घेरकर चारों कोनों में हड्डियां रखकर उसे मंत्र से आबद्ध कर दिया था । अब अंदर की अशरीरी शक्ति उस चौखाने से बाहर नहीं निकल सकती थी ।

यह स्थिति उसके लिए परेशान करने वाली थी और इसका असर मोनिका के शरीर पर भी दिख रहा था !
मोनिका की आंखें बड़ी बड़ी हो गई थी और लाल सुर्ख हो रही थी !
ऐसा लग रहा था जैसे वह क्रोध के आवेश में थरथरा रही हो...
काफी प्रयास करने के बाद भी वह उस चौखाने से बाहर नहीं निकल पा रही थी ।
ऐसा लग रहा था जैसे उन लकीरों की बजाय वह कोई दीवाल हो जिस से टकराकर उसे वापस लौट जाना पड़ रहा हो ।

कबीर उसे देख कर घबरा रहा था !
उसने मोनिका को कभी भी इस रूप में नहीं देखा था ।

दूसरी तरफ बैगा अपने कार्य में पूरी तरह से मगन था !
वह आंखें बंद करके बैठा हुआ था और उसके सामने
कुछ चीजें बिखरी हुई थी !

उसमे एक नरमुंड था अर्थात मनुष्य की खोपड़ी !!
उसी के बगल में रखा हुआ था एक खप्पर या मिट्टी का
बना हुआ बर्तन !

उसने अपने झोले से निकाल कर एक देसी शराब की
बोतल खोल कर आधा उस खप्पर में डाल दिया और
बचा हुआ आधा भाग खुद डकार गया !

कबीर हैरानी बेचैनी और उत्सुकता के भाव के साथ
अपने आसन पर बैठा हुआ था....

प्रक्रिया को प्रारंभ करने से पहले उस बैगा ने एक गोल
घेरा बनाकर उस घेरे के अंदर कबीर को बिठा दिया था
।

साथ ही उसे सख्त ताकीद भी दी थी कि किसी भी स्थिति में वह उस गोल घेरे से बाहर ना निकले । अन्यथा किसी भी परेशानी के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होगा और वैसी स्थिति में बैगा कुछ भी नहीं कर पाएगा ।

उसने साथ ही समझाया था कि जो भी प्रक्रियाएं होंगी वह अजीबोगरीब होंगी और उससे डरने या घबराने की कोई जरूरत नहीं है । अगर मोनिका को उस आत्मा से मुक्त करना है तो यह सारी चीजें करनी होगी और इससे उसे कोई नुकसान नहीं होगा.....
कबीर उस घेरे के अंदर बैठा हुआ था । मोनिका की हरकतों को देख कर उसे आभास हो रहा था कि इसके शरीर में कुछ ना कुछ मौजूद है ।
कुछ समय के बाद बैगा ने आंखें खोली और मोनिका को देखते हुए उससे सवाल पूछा - तू कौन है ।
मोनिका ने जवाब दिया - मैं मोनिका हूं ।

कबीर को उसकी आवाज सुनकर आश्चर्य हुआ , क्योंकि वह आवाज मोनिका की नहीं थी बल्कि किसी और की थी ।

ऐसा लग रहा था जैसे मोनिका के अंदर से कोई और बोल रहा हो.....

कुछ समय और मंत्र जाप करने के बाद बैगा ने दुबारा मोनिका से सवाल पूछा - तू कौन है ?

मोनिका का जवाब वही था - मैं मोनिका हूं ।

बैगा के तेवर बदल चुके थे ।
उसके चेहरे पर क्रोध के लक्षण दिखाई दे रहे थे । उसने अपने थैले में हाथ डाला और एक मुट्ठी भस्म जैसी कोई चीज निकाली और उसे अपनी हथेली पर रखकर हथेली को खोल दिया और विचित्र प्रकार के मंत्रों का जाप करने लगा ।
जिसमें से कुछ कुछ शब्द तो कबीर की समझ में आ रहे थे, लेकिन बाकी के शब्द इतने अजीब थे कि वह उनका कोई अर्थ भी नहीं निकाल पा रहा था।

मंत्र कई प्रकार के होते हैं और उसमें से एक होता है शाबर मंत्र । ऐसा माना जाता है कि आम जन को संस्कृत के मंत्रों के उच्चारण में होने वाली असुविधा से

बचाने के लिए भगवान शिव ने सामान्य भाषा में इन मंत्रों का उद्भव किया था ।

साबर मंत्र कई प्रकार की भाषाओं में होते हैं और इनमें जो भाषा सबसे ज्यादा पाई जाती हैं वह है असमी ।

बहुत से गोपनीय और गूढ़ प्रक्रियाओं के मंत्र असमी भाषा के शब्दों से होते होते हैं और बेहद प्रभावशाली होते हैं क्योंकि असम देवी के मूल स्वरूप कामाख्या का स्थान है । इसलिए तंत्र विद्या का मूल भी वही माना जाता है ।

असमी भाषा के शब्दों में बने हुए मंत्र बिरले साधकों के पास ही होते हैं । इसके अलावा स्थानीय भाषाओं के शब्द भी इस में जुड़े होते हैं ।

कई मंत्रों में आन अर्थात उस देवता को ललकारा जाता है कि आपके होते हुए ऐसा कैसे हो रहा है ?

कई मंत्रों में उनको दुहाई दी जाती है !

कई मंत्रों में विचित्र प्रकार की बातें बोली जाती है जो सुनने में बेहद अजीब और अटपटी लग सकती है ।

लेकिन इनमें से अधिकांश मंत्र अगर सिद्ध किए गए हो तो अपना काम कर जाते हैं ।

समारु भी एक सिद्ध बैगा था । उसने उन मंत्रों का जाप करने के बाद हथेली पर रखी हुई भस्म को मोनिका की तरफ उड़ा दिया.....

जैसे ही उसने फूंक मारी !
भस्म हवा में एक गुबार की तरह उड़ा और उसका एक बड़ा हिस्सा मोनिका की तरफ जाकर उसके सारे शरीर में चिपक गया !
जैसे ही वह भस्म उसके शरीर में चिपकी .....

मोनिका के मुंह से एक दर्दनाक चीख निकली .....

ऐसा लगा जैसे उसे बहुत जोरदार पीड़ा हुई हो.....

बैगा ने फिर से पूछा - तू कौन है ?

उसने घबराई हुई आवाज में कहा - मैं मीना हूं ।

यह सुनकर कबीर आश्चर्यचकित रह गया ।

बैगा ने अगला सवाल पूछा - तू इस बच्ची को क्यों परेशान कर रही है ?

उसके बाद मीना ने अपनी कहानी सुनाई ....

मोनिका की देह से मीना बोली- मैं अपने माता-पिता की इकलौती बेटी थी !
उसके बाद सुनील के विषय में उसने सारी कहानी बताइ और कहा कि मेरी शादी राम गोपाल गुप्ता से कर दी गई कुछ दिनों के बाद सुनील से फिर मुलाकात हुई । बाद मे सास के द्वारा पकड़ लिया जाने के बाद उन्होंने मुझे अपने घर से निकाल दिया । मेरी हरकतों के बारे में जानने के बाद मेरे मायके वालों ने भी मुझे शरण नहीं दी । उसके बाद जब मैं नदी के किनारे पहुंची थी तब कबीर मुझे मिला और उसके साथ मैंने बहुत अच्छा समय गुजारा ।
लेकिन...
कबीर भी धीरे-धीरे कमजोर पड़ता जा रहा था ।
उसके राजिम जाने के बाद मैं भी गाँव के पास वाले मंदिर जाने के लिए निकली और वहां पर मुझे सुनील मिला ।

मुझे देख कर वह बहुत खुश हुआ और उसने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा । मैं उसके साथ चली गई । उसने मुझे अपने घर में रहने की जगह दे दी ।
हम दोनों वापस मजे से रहने लगे ।
हां ! पैसे की थोड़ी तंगी थी, लेकिन जिस चीज की इच्छा मुझे थी ; वह मुझे मिल रही थी ।
कुछ समय बाद मुझे पता चला कि सुनील पहले से शादीशुदा है और उसकी पत्नी गांव में रहती है । यह जानकर मुझे थोड़ा सा दुख आवश्यक हुआ लेकिन मेरे पास कोई रास्ता नहीं था .....

एक और दिक्कत यह थी कि मुझे अब सुनील भी संतुष्ट नहीं कर पा रहा था .....

मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरी इच्छाएं बढ़ती जा रही है । मुझे लग रहा था कि मैं निंफ़ोमेनियक हो गई हूँ ।

****

यह एक प्रकार की मानसिक बीमारी होती है जिसे "निंफ़ोमेनिया" कहते हैं । इस प्रकार की बीमारी मे स्त्री के शरीर मे कुछ इस प्रकार का हार्मोनल इमबेलेन्स

अर्थात गड़बड़ी हो जाती है कि उसके अंदर अदम्य कामवासना जागृत हो जाती है । इसके चलते वह संतृप्त नहीं हो पाती है । यह बीमारी लाखों में से किसी एक को ही होती है । क्लियोपेट्रा को भी ऐसा ही माना जाता था । भारत में कुछ लोगों का यह भी मानना था कि प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मीना कुमारी को भी इस प्रकार की समस्या थी । इसके संबंध में कोई प्रमाण मौजूद नहीं है इसलिए यह एक विवादित विषय है । मनोविज्ञान इस बीमारी के अस्तित्व को स्वीकार करता है और इसके उदाहरण कभी-कभी समाज में भी दिखाई देते हैं । ज्यादा विवरण के लिए आप गूगल सर्च कर सकते हैं ।

******

मीना आगे बोली - मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरी इच्छाएं बढ़ती जा रही है । एक दिन मोहन घर पर आया जबकि सुनील अपने गांव गया हुआ था । वह मुझे पहले से जानता था इसलिए सुनील गांव जाते समय उसे मुझे किसी प्रकार की जरूरत होने पर मदद कर देने के लिए बोलता था और वह उसी लिए आया था ।

मुझे केवल अपने देह की भूख की चिंता थी और मोहन मुझे उसके लिए उपयुक्त व्यक्ति लगा । धीरे-धीरे उसके साथ मेरे संबंध बनने लगे । जब सुनील काम पर जाता तो वह घर पर आ जाता और इस प्रकार से हम दोनों का संबंध चलता रहा ।

इस प्रकार की चीजें बहुत दिनों तक छुपी नहीं रहती और सच सामने आ ही जाता है .....

एक दिन सुनील सुबह गांव जाने वाला था । उसके निकलने के बाद मोहन घर पर आ गया । सब सही था .....
लेकिन एक गड़बड़ हो गई ।
सुनील जब बस स्टैन्ड की ओर जा रहा था तो रास्ते में उसे उल्टियां होने लगी और तबीयत खराब होने की वजह से वह वापस लौट आया ।
जब वह वापस लौटा तब हम दोनों संदिग्ध स्थिति में थे ।
यूं समझ लीजिए कि उसने हमें रंगे हाथों पकड़ लिया ....

उसने मोहन को गाली गलौज कर के भगा दिया और मेरी भी पिटाई की ।

उस दिन तो कुछ नहीं हुआ लेकिन अगले दिन सुनील ने मुझे बहुत समझाया और मुझे मनाकर अपने साथ लेकर घूमने निकला ।

हम लोग घूमते घूमते नदी के पार वाले होटल तक आ गए । नाश्ता करने के बाद वहां से कोल्ड ड्रिंक की बोतल लेकर उसे खुलवा लिया और मुझे साथ लेकर यहां पर आ गया ।

उस समय अंधेरा छाने लगा था । नदी के किनारे ही उसने मुझे कोल्ड ड्रिंक भी पिलाया ।

उसने उसमें कुछ मिला दिया था, जिसकी वजह से मैं बेहोश हो गई और उसने मुझे जिंदा ही दफन कर दिया और खुद भी नदी में कूद गया, ...

पानी में डूबने से उसकी मौत हो गई और इधर दम घुटने की वजह से मेरी मौत हो गई .....

सुनील की लाश 40 किलोमीटर आगे नदी के किनारे बरामद हो गई । लेकिन तब तक वह इतनी सड़ चुकी थी कि उसके बारे में भी कुछ किसी को पता नहीं चल पाया । एक गुमनाम लाश के रूप में उसका भी क्रिया कर्म कर दिया गया ।

रात का अंधेरा था और गांव के लोग इतनी देर तक आवागमन नहीं करते थे इसलिए इस बात का किसी को पता नहीं चला । शमशान वाली जगह पर दफनाया भी जाता है इसलिए किसी को बाद में भी संदेह नहीं हुआ कि यहां पर कुछ गड़बड़ हुई है । सभी को लगा कि किसी मृत व्यक्ति को वहां पर दफनाया गया होगा ।

मुझे खोजने वाला भी कोई नहीं था इसलिए ना तो मेरे गायब होने की कोई रिपोर्ट हुई और ना ही किसी ने मुझे खोजने की कोशिश की ।

लेकिन .....

मेरी अतृप्त इच्छाएं समाप्त नहीं हुई थी उसे पूरा करने की मेरी इच्छा अभी बनी हुई थी ।

******

ऐसा माना जाता है कि कोई भी व्यक्ति जिस इच्छा के साथ या यूं कह लीजिए कि जिस अतृप्त इच्छा के साथ अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है, वह इच्छा उसके साथ चलती रहती है । उसकी आत्मा अगर दूसरी योनि में भटक रही हो तो वह अपनी उस इच्छा की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयत्न करती रहती है । इसमें दूसरे मनुष्य की देह का सहारा लेकर उस इच्छा की पूर्ति करना भी शामिल है । जैसा कि इस प्रकरण में हो रहा था ।

****

मीना आगे बोली - अकाल मृत्यु की वजह से प्रेत योनि में आ चुकी थी लेकिन मेरी अतृप्त इच्छाएं समाप्त नहीं हुई थी उसे पूरा करने की मेरी इच्छा अभी बनी हुई थी । उस रात मोनिका शमशान के उसी भाग पर आकर बैठ गई जहां पर मुझे सुनील ने गड़ाया था ।

मैंने मोनिका के शरीर पर कब्जा कर लिया और उसके शरीर के माध्यम से वापस उस सुख को भोगने लगी .....

सारी कहानी सुनने के बाद समारू बैगा ने उसे मोनिका का शरीर छोड़ने के लिए कहा ।

उसने इंकार कर दिया !

काफी देर तक दोनों के बीच जद्दोजहद चलती रही !

लेकिन मीना मानने को तैयार नहीं थी ।

मुश्किल से आए इस अवसर को नहीं खोना चाहती थी ।

एक अच्छे साधक की है पहचान होती है कि वह यथासंभव शांतिपूर्ण ढंग से समाधान निकालने की कोशिश करता है ताकि किसी को नुकसान न पहुंचे । आखिर समारू को गुस्सा आ गया और उसने अपने थैले से एक लोटे के आकार की वस्तु निकाली । जिसमें ढक्कन भी लगा हुआ था । जिसका आकार मुश्किल से 4 इंच का रहा होगा । उसका ढक्कन उसने खोल दिया और सामने रखी खोपड़ी पर रख दिया और ढक्कन के ऊपर उस बर्तन को रख दिया ।

समारू ने उठकर उस खोपड़ी को घेरते हुए एक और चौखाना बनाया, जिसे उसने उसी चौखाने के साथ मिला दिया । जो मोनिका के चारों तरफ बना हुआ था ।

अब दो चौखाने थे !

जिसमें से एक चौखाने के अंदर मोनिका बैठी हुई थी और दूसरे चौखाने के अंदर वह नरमुंड और वह पात्र था.....

चौखाना बनाने के बाद बचे हुए 2 कोनों पर भी बैगा ने दो और हड्डियां रख दीं ।

उसके बाद उसने कुछ मंत्र पढ़कर फूंका तो दोनों चौखानों के बीच वाली रेखा मिट गई ।

अब वह एक बड़ा चौखाना बन चुका था । जिसमें मोनिका भी थी और वह नरमुंड भी !

जिसके ऊपर छोटा सा अजीबोगरीब पात्र रखा हुआ था !

उस बर्तन को देखकर मीना चिल्लाने लगी और कहने लगी - मुझे छोड़ दो ! मुझे छोड़ दो !! मैं इसका शरीर छोड़ कर चली जाऊंगी !!!

लेकिन बाबा आरपार के मूड में आ चुका था !
उस पर उसके चिल्लाने का कोई असर नहीं हुआ !!
समारू ने आदेश देने वाले लहजे में कहा - तू इस बर्तन में आ जा ।
मीना ने कहा - मुझे छोड़ दो !! मुझे छोड़ दो !!!

वह बराबर यही कहती रही । पर उसका कोई असर नहीं हुआ .....
बैगा ने उससे फिर कहा - तू इस बर्तन में आजा ।

वह तब भी तैयार नहीं हुई !
बैगा ने अपने कुर्ते में हाथ डाला और उसमें से लौंग के 3 दाने बाहर निकाले !

तीन में से एक लौंग उसने खोपड़ी के ऊपर रखा !

एक लौंग अपने दांतो के बीच में दबाया !

उसके बाद तीसरा लौंग अपनी हथेली में रखकर मंत्र का जाप करने लगा । जैसे-जैसे वह मंत्र जाप कर रहा था ।
मोनिका का शरीर किसी कपड़े की तरह उमेठ रहा था !

बिल्कुल उसी तरह जैसे हम गीले कपड़े को निचोड़ने के लिए दोनों तरफ से पकड़ कर उमेढते हैं .....
ठीक वैसे ही ....
उसके साथ हो रहा था ।

यह देखकर कबीर बहुत परेशानी महसूस कर रहा था लेकिन बाबा की बात को मान कर अपने स्थान पर बैठा हुआ था ।

यह प्रक्रिया लगभग 1-2 मिनट तक चली होगी । उसके बाद बाबा ने अपनी हथेली पर एक फूँक मारी और वह लौंग हवा में उड़ती हुई जाकर मोनिका के माथे पर चिपक गइ ।

जैसे ही वो उसके माथे पर जाकर चिपकी !

मोनिका के शरीर से काले धुए का एक छोटा सा गुबार बाहर निकला और लहराता हुआ उस बर्तन के अंदर समा गया ।

जैसे ही वह बर्तन के अंदर गया बैगा ने अपने दांत के अंदर दबे हुए लौंग को भी उस बर्तन के अंदर डाल दिया

और उस ढक्कन को बंद कर दिया । खोपड़ी पर रखा हुआ तीसरा लौंग वह चबाकर खा गया !

उधर मोनिका अपने स्थान पर गिरकर बेहोश हो चुकी थी.....

मोनिका के माथे पर लौंग अब भी चिपका हुआ था । उसे निकालकर समारू ने उसे माचिस से जला दिया और उसकी राख को बर्तन के ऊपर छिड़क दिया .....

उसके बाद उस बर्तन को एक काले रंग के कपड़े में लपेट दिया और उसमें 7 गांठ बांध दी ।

इतना करने के बाद समारू ने कबीर को एक कुदाल लेकर अपने साथ चलने के लिए कहा ।

उस समय रात के लगभग एक बज रहे थे पूरे गांव में सन्नाटा छाया हुआ था !

कुत्तों के अलावा सड़क पर कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था!!

अभी के समान स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था भी उस समय नहीं थी और अमावस्या की रात होने की वजह से वैसे ही चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था !!!

दोनों गांव से लगभग 1 किलोमीटर आगे गए और जंगल में एक इमली के पेड़ के नीचे लगभग 2 फीट गड्ढा खोदकर उस बर्तन को उसके नीचे गाड़ दिया और वापस लौट आए .....

अगले दिन सुबह बैगा अपना दक्षिणा का धन ले कर वापस अपने स्थान को चला गया.....

मोनिका उस दिन शाम तक सोती रही । बैगा ने कबीर को बता दिया था कि जब तक वह अपने से नहीं उठे उसे नहीं उठाना ,और 3 दिन तक उसका भोग नहीं करना ।

कबीर ने उसकी बात का अक्षरशः पालन किया । तीन दिन के बाद मोनिका एकदम सामान्य हो गई ।

उसके बाद दोनों का वैवाहिक जीवन काफी आनंदमय रहा और उसके तीन साल बाद उनके घर में एक नन्हीं बिटिया आई और उनका परिवार पूरा हो गया ।

----- समाप्त ----

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।
14. कापालिक चंडेश्वर ।
15. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।
16. वह रहस्यमय युवती ।
17. परेतिन की शादी ।

साधना विधियाँ :-

1. गुरुपूजन की विधियाँ ।
2. मंत्र साधना और गुरु की आवश्यकता ।
3. अकाल मृत्यु तथा रोग नाशक मंत्र ।

4. श्री गणेश पूजन की विधियाँ ।

5. महालक्ष्मी पूजन ।